[Shri A. P. Jain]

to supplies, but the prices should also show a downward trend.

16 hrs.

Shrimati Renu Chakravartty: May I have the right of reply?

Mr. Deputy-Speaker: No. In discussion like this, there is no right of reply. Unless it is a motion, there is no right of reply.

COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILLS AND RESOLUTIONS

SEVENTH REPORT

Shri Supakar (Sambalpur): I beg to move:

> "That this House agrees with the Seventh Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 10th September 1957".

Mr. Deputy-Speaker: I shall now put the motion to the vote of the House. The question is:

> "That this House agrees with the Seventh Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 10th September 1957".

The motion was adopted.

REOSLUTION *RE*: NATIONALISATION OF SUGAR INDUSTRY

Mr. Deputy-Speaker: The House will now resume further discussion of the Resolution moved by Shri Khushwaqt Rai on the 30th August 1957 regarding nationalisation of the sugar industry.

Out of 2 hours allotted for the discussion of the Resolution, 25 minutes have already been taken up and 1 hour and 35 minutes are still left for its further discussion today.

Shri Khushwaqt Rai may continue his speech. If he wants that others should support him, he should conclude soon. 30 minutes is the maximum that the hon. Member can have for his speech on the Resolution. He has already taken 25 minutes and 5 minutes are left.

श्री खुशवक्त राय (खेरी) :

I will finish in 5 minutes.

उपाध्यक्ष महोदय, उस दिन जब मैं बोल रहा था, तो मैं गन्ने की कीमतों की बात कह रहा था । हमारी सरकार ६.५ रिकवरी को बेसिस पर गन्ने की कीमतें मुकर्रर करती है । मगर काश्तकार की दिक्कत यह है कि जब रिकवरी अधिक होती है तो उसको दाम ज्यादा नहीं मिलते है और अगर रिकवरी जरा सी कम होती है, तो दाम घट जाते है । अंग्रेजी की एक मसल है कि हेड्स आई विन, टेल्स यू लूज । वही बात होती है, यानी काश्तकार का भला किसी तरह से नही होता है ।

दूसरी बात यह है कि इन मिलों में कुप्रबन्ध इतना ज्यादा है कि बहुत सी मिले गन्ने के दाम भी नही दे पाती है । यू० पी० में बहुत सी मिलें ऐसी हैं, जो सैस नही दे पाती है । होता क्या है कि सारा रुपया मिल-मालिक के निजी खर्च में चला जाता है या कांग्रेस के इलैक्शन फंड में आता है । उत्तर प्रदेश में जब पिछली बार चुनाव हुए थे, तो काफी बडी रकम शक्कर के कारखानों के मालिकों ने कांग्रेस को दी थी । यही वजह है कि आज शक्कर के कारखाने कायम हैं, वर्ना मैं कह सकता हूं कि जिस भावना से, जिस कारण से लाइफ इन्शोरेंस बिजिनैस--जीवन बीमा कारोबार का सरकार ने राष्ट्रीयकरण किया, वही कारण आज उपस्थित है कि जिन के आधार पर शक्कर के कारखानों का राष्ट्रीयकरण हो जाना चाहिये ।

इन शब्दों के साथ मैं अपने प्रस्ताव को इस सदन के सामने उपस्थित करता हूं और आशा करता हूं कि मंत्री महोदय मेरे प्रस्ताव को स्वीकार करेंगे ।

Mr. Deputy-Speaker: Resolution moved:

> "This House recommends to the Government that the sugar industry be nationalised."